खंडित मन :
सभ्यता का रोग

मन दो नहीं है, मन दो कर दिए गए हैं। मन एक ही होना चाहिए

प्रश्न : किसी–किसी समय ऐसा प्रतीत होता है, मन दो हैं। एक मन कहता है यह रास्ता है, दूसरा कहता है कि वह रास्ता है। आप अपने विचार प्रकट कीजिए?

मन तो एक ही है। लेकिन मनुष्य ने मन को जिस भांति विकसित किया है, यह विकास की पद्धति गलत होने से मन अपने भीतर ही विभाजित हो गया है। मनुष्य का मन तो वही कहता है, जो अत्यंत प्राकृतिक है। लेकिन मनुष्य की सभ्यता उस प्रकृति पर रोक लगाती है, और कहती है, यह गलत है, यह मत करना। बचपन से हम बच्चे को सिखाना शुरू करते हैं कि यह गलत है, यह मत करना। यह बुरा है, यह मत करना। यह पाप है, इससे अहित होगा, इससे नरक होगा, इससे दंड मिलेगा। तो बच्चे के भीतर, एक तो प्रकृति है, जो कहती है कि ठीक है। और एक उसको सिखाई गई शिक्षाएं हैं, वे कहती है, यह ठीक नहीं हैं दूसरी बात ठीक है। परिणाम यह होता है कि हमेशा मन में द्वंद्व खड़ा हो रहता है–हमेशा। कोई भी बात आ जाए, मन में द्वंद्व खड़ा हो जाएगा, क्योंकि प्रकृति कुछ और कहती है और ये सिखाई हुई बातें कुछ और कहती हैं। इस भांति मनुष्य के भीतर द्वंद बढ़ता जाए तो मनुष्य पागल भी हो सकता है। पागलपन इसी वजह से होता है। इसलिए जितनी सभ्यता बढ़ती है। उतना पागलपन बढ़ता है। जितनी सभ्यता बढ़ती है उतने विक्षिप्त लोग बढ़ते हैं।

मैं सुनता था कि न्यूयार्क के कुछ हिस्सों में हरेक मकान के बाद मनोचिकित्सक का दूसरा मकान है और तख्ती लगी है। एक वक्त ऐसा आएगा, वहां के एक मनोवैज्ञानिक ने कहा, पचास साल बाद

बच्चे को वह मार्ग सिखाइए कि तुम क्रोध मत करना, क्रोध बुरा है। बच्चे को वह मार्ग सिखाइए, जहां से उसे शांति मिलनी शुरू हो जाए। अगर उसका चित्त शांत होगा, तो वह क्रोध तो कर ही नहीं पाएगा। यह मत सिखाइए कि क्रोध करो

न्यूयार्क में आधे मकान सामान्य लोगों के, आधे मकान मन की चिकित्सा करने वाले डॉक्टरों के होंगे। कभी ऐसा भी वक्त आ सकता है कि सभी मकान उनके हों। विकास होगा तो ऐसे ही होगा। सभ्यता जितनी बढ़ी है, अगर उसकी ठीक-ठीक गणना स्पष्ट हो तो आप घबरा जाएंगे। जितने असभ्य लोग हैं, उनमें पागल होने की संख्या उतनी ही कम है। जितनी असभ्य जातियां हैं, उनके पागल होने की मात्रा बहुत कम है। और फिर जैसे सभ्यता बढ़ती है, उतनी ही पागल होने की संख्या बढ़ती चली जाती है। अमरीका के हिसाब से, इस समय अमरीका में चालीस प्रतिशत लोग ठीक मानसिक स्थिति में नहीं हैं। चालीस प्रतिशत! बाकी बीस प्रतिशत लोग किसी भी दिन अपने मानसिक संतुलन को खो सकते हैं, साठ प्रतिशत हुए। शेष जो चालीस प्रतिशत हैं, जरूरी नहीं है कि वे सब स्वस्थ हों। उनमें से बहुत से लोग ऐसे भी हो सकते हैं, जो डॉक्टरों के पास कभी गए नहीं हैं। अमरीका इस समय सबसे बड़ा सभ्य मुल्क है। अगर इसका कोई भी कारण पूछना चाहे तो मैं कहूंगा, क्योंकि पागलों की संख्या वहां सर्वाधिक है। जिस दिन कोई मुल्क पूरा का पूरा पागल हो जाएगा, वह सभ्यता की चरम स्थिति होगी। ऐसा विकास हो रहा है।

यह क्या हो रहा है? असभ्य आदमी के ऊपर बहुत कम नियंत्रण होते हैं। जो उसे ठीक-ठीक भीतर से लगता है, वह करता है। क्रोध आता है तो क्रोध करता है, गुस्सा आता है, गुस्सा करता है। हत्या करने का मन होता है, तो हत्या करता है। उसे जो ठीक लगता है, प्रेम होता है तो प्रेम करता है। उसे जो ठीक लगता है, वह करता है, जो प्रकृति कहती है। हम कहेंगे, यह तो बड़ी पाशविक स्थिति हो गई, पशु की स्थिति हो गई।

निश्चित ही, यह स्थिति शुभ नहीं है। इस स्थिति को बदलना जरूरी है। तो हम क्या करें? तो हम यह सिखाते हैं कि क्रोध बुरा है, क्रोध को पी जाओ। क्रोध करो मत। हम कहते हैं कि अगर तुम्हें किसी से प्रेम हो जाए तो अपने मन को संयम में रखो, प्रेम करो मत। हम ये बातें सिखाते हैं, ताकि आदमी पशु न रह जाए। पशु होने से तो बच जाता है, लेकिन वह पागल हो जाता है। अभी तक दो ही विकल्प हैं—या तो पशु, या पागल। ठीक आदमी कैसे पैदा करें? जो थोड़ी बीच में होते हैं, वे आधे पशु होते हैं, आधे पागल होते हैं। इसीलिए चलते चले जाते हैं, उनको ज्यादा दिक्कत नहीं आती। या ऊपर से तो सभ्य होते हैं और भीतर से सभ्य नहीं होते। तो भी चल जाता है।

तो तीसरा विकल्प है पाखंड—कि दिखाओ ऊपर से कि मैं बहुत अच्छा आदमी हूं। भीतर से जो प्रकृति कहती है वह किए चले जाओ तो दो मुख पैदा हो जाते हैं आदमी के भीतर। भीतर कुछ होता है, बाहर कुछ होता है। बाहर सभ्य और भीतर अपने पशु को कायम रखता है। या तो पाखण्ड पैदा होता है। अगर जिद्दी हो और कहे कि मैं तो पूरी तरह सभ्य होकर ही रहूंगा, तो फिर पागल होगा। और अगर जिद्दी दूसरा हो और कहे कि मैं तो कुछ भी न मानूंगा। मुझे तो सुखद लगता है, वही करूंगा, जो प्रीतिकर लगता है, वही करूंगा, वह पशु हो जाता है।

तब रास्ता क्या है इन तीन के बीच? ये तीनों ही बातें गलत हैं। मनुष्य के भीतर जो-जो वृत्तियां हैं, वे दमन से नहीं, शुभ की तरफ ले जाती हैं। उसकी मैंने बात की पीछे आपसे कि मनुष्य की वृत्तियों के दमन के दुष्परिणाम होते हैं। उससे वह सभ्य होता नहीं, सिर्फ सभ्य दिखाई पडता है। और इसलिए उसके मन में द्वंद पैदा हो जाता है। मनुष्य की पूरी प्रकृति का रूपांतरण होना चाहिए दमन नहीं।

सेक्स का मन में सम्मान होना चाहिए, निंदा नहीं। सेक्स के प्रति प्रकृतिस्थ स्वस्थ दृष्टिकोण होना चाहिए, जानना चाहिए कि वह जीतने की अत्यंत अनिवार्यता है। और जानना चाहिए कि सारी प्रकृति उस पर खड़ी है, सारा विराट सृजन उस पर खड़ा हुआ है

बच्चे को वह मार्ग सिखाइए कि तुम क्रोध मत करना, क्रोध बुरा है। बच्चे को वह मार्ग सिखाइए, जहां से उसे शांति मिलनी शुरू हो जाए। अगर उसका चित्त शांत होगा, तो वह क्रोध तो कर ही नहीं पाएगा। यह मत सिखाइए कि क्रोध करो, उसे यह सिखाइए, पोजीटिवली उस रास्ते पर ले जाइए विधायक रूप से, जहां उसके चित्त में शांति का उदय हो। शांति का उदय सिखाइए, क्रोध न करने की बात मत सिखाइए। उससे उसका जीवन खतरनाक हो जाएगा, गलत हो जाएगा। उसका सारा जीवन नष्ट हो सकता है। और ब्रह्मचर्य ने जिन-जिन कौमों के मन को बहुत ज्यादा प्रभावित किया है, उनका सारा दांपत्य जीवन नष्ट हो गया है और उनके भीतर इतनी ज्यादा कामुकता पैदा हो गई है, जिसका कोई हिसाब नहीं। वे कौमें चौबीस घंटे सेक्स के सिवाय कुछ भी नहीं सोच रही हैं। उनका सारा चिंतन वहीं केंद्रित हो गया है। बातें वे भगवान की करते हैं, चिंतन वे सेक्स का करते हैं। करेंगे ही। क्योंकि ब्रह्मचर्य जीवन है और सेक्स नरक है, यह सिखाया जा रहा है।

इसके दुष्परिणाम हुए हैं, दुष्परिणाम हो रहे हैं, दुष्परिणाम निरंतर होते रहे हैं। नहीं, सेक्स से अगर बच्चे के जीवन को ऊपर ले जाना है, तो उसे प्रेम सिखाइए। उसे ब्रह्मचर्य मत सिखाइए। जितना प्रेम विकसित होता है, सेक्स उतना ही विलीन हो जाता है। और हृदय जिस दिन पूरी तरह प्रेम से भर जाता है, उस दिन कामुकता शून्य हो जाती है। क्योंकि सारी की सारी सेक्स की शक्ति प्रेम में परिवर्तित होती है। प्रेम सिखाइए। पौधों से प्रेम सिखाइए, पत्थरों से प्रेम सिखाइए। बच्चे के हृदय को प्रेम से भरिए जिसके पास जाए, प्रेम से भरा हुआ जाए। उसके जीवन में अपने-आप प्रेम के कारण ब्रह्मचर्य चला जाएगा। वह ब्रह्मचर्य बहुत और बात है जो प्रेम से फलित होता है। और जो ब्रह्मचर्य सेक्स के दबाने से

फलित होता है, वह बिलकुल दूसरी बात है। वह बहुत खतरनाक बीमारी है।

एक साध्वी के पास मैं था, मेरी चादर हवा में हिली और उनको छू गई तो वह घबरा गईं, क्योंकि पुरुष की चादर साध्वी को नहीं छूनी चाहिए। वह मुझसे आत्मा की बातें कर रही थीं और मुझसे कह रही थीं की शरीर तो हम नहीं हैं, हम आत्मा हैं। तो मैंने उनसे कहा, मैं तो बहुत हैरान हो गया, आप तो कहती हैं आप शरीर नहीं हैं, और चादर मेरी किसको छू रही है, आपकी आत्मा छू रही है? और मैंने कहा, मैं यह भी पूछना चाहूंगा कि चादर पुरुष ने ओढ़ ली तो यह चादर भी पुरुष हो गई? यह तो हद दर्जे की सेक्सुअलिटी हो गई। यह तो हद दर्जे की कामुकता हो गई कि चादर भी पुरुष हो गई, चूंकि पुरुष ने ओढ़ ली! इसको छूने से क्या घबराहट हो रही है? घबराहट यह हो रही है कि वह जो सेक्स दबाया गया है, वह दबाया गया सेक्स हमेशा धक्के मार रहा है। वह तो पुरुष की चादर भी छू जाए तो भी ऊपर आ जाएगा उठ करके। यह ब्रह्मचर्य नहीं हुआ, यह तो अत्यंत मानसिक रूप का व्यभिचार हुआ। और यही व्यभिचार चल रहा है ब्रह्मचर्य के नाम से।

ब्रह्मचर्य तो प्रेम से फलित होता है। जब हृदय परिपूर्ण प्रेम से भर जाता है, तो ब्रह्मचर्य अपने-आप फलित होता है। ब्रह्मचर्य की शिक्षा मत दीजिए। प्रेम सिखाइए। और फिर देखिए कि जीवन में कैसा रूपांतरण होता है। मेरा कहना यह है कि हमारी सारी नैतिक शिक्षा गलत होने से मन दो हिस्सों में टूट जाता है। प्रकृति कहती है, सेक्स, और शिक्षा कहती है, ब्रह्मचर्य। बस टूट हो गई, खतरा हो गया। जीवन कष्ट में पड़ेगा, दुविधा में पड़ेगा, खंड-खंड हो जाएगा, कांफ्लिक्ट पैदा होगी और इसी में आदमी टूटता है और नष्ट होता है। मैं कहता हूं, प्रकृति का विरोध घातक है, प्रकृति का परिवर्तन, प्रकृति का ट्रांसफॉर्मेशन, प्रकृति का ऊर्ध्वगमन तो सहयोगी है। सेक्स की दुश्मनी में मत खडे हो जाइए, प्रेम के पक्ष में जीवन को विकसित करिए। जितना प्रेम विकसित होगा, सेक्स की शक्ति प्रेम में अपने-आप समाहित होती चली जाएगी। जिस दिन प्रेम पूरा हृदय में भर जाएगा। उस दिन उस हृदय में कामुकता अपने-आप विलीन हो जाएगी। और किसी भांति

सेक्स से अगर बच्चे के जीवन को ऊपर ले जाना है, तो उसे प्रेम सिखाइए। उसे ब्रह्मचर्य मत सिखाइए। जितना प्रेम विकसित होता है, सेक्स उतना ही विलीन हो जाता है। और हृदय जिस दिन पूरी तरह प्रेम से भर जाता है, उस दिन कामुकता शून्य हो जाती है

से कामुकता विलीन नहीं होती। और सब भांति के उपाय असफल हुए हैं, लेकिन ईमानदारी से चिंतन नहीं है, इसलिए थोथी बातों को भी हम दोहराएं चले जाते हैं, उन पर कभी विचार भी नहीं करते।

मन दो नहीं हैं, मन दो कर दिए गए हैं। मन एक ही होना चाहिए। और एक ही होने का यह मतलब नहीं पशु हो जाए। नहीं, मनुष्य के भीतर जो पशुता जैसी मालूम होती है, उस एक ही मन को बिना खंडित किए विकसित किया जा सकता है। और वही पशुता जो ठीक-ठाक विकसित हो, तो दिव्यता में परिवर्तित हो जाती है। यह मन का जो द्वैत है, यह गलत शिक्षा, गलत संस्कृति, गलत सभ्यता, गलत धर्म की शिक्षा का परिणाम है। और यह द्वैत तो होगा।

मैं एक घर में ठहरा था। गृहणी ने मुझसे कहा, में अपने पति को बहुत प्रेम करती हूं, अथक प्रेम करती हूं। उन्हें परमात्मा की ही तरह मानती हूं, लेकिन फिर भी कलह हो जाती है, रोज कलह हो जाती है। छोटी-छोटी बात पर कलह हो जाती है। बड़ी हैरानी होती है कि जिसको मैं]ता परमात्मा की तरह मानती हूं, प्रेम करती हूं, उससे छोटी-छोटी बात पर कलह क्यों हो जाती है? उसकी छोटी-छोटी आज्ञा मानना भी कठिन हो जाता है। उसकी छोटी-छोटी इच्छा पर झुकना भी कठिन हो जाता है। मैं ही उसे उल्टी झुकाने की कोशिश करती हूं। तो क्या कठिनाई है, मुझे कहें। तो मैंने उनसे पूछा कि तुम्हारा सेक्स के प्रति क्या दृष्टिकोण है?

बचपन से हम बच्चों को, बच्चियों को सिखा रहे हैं कि सेक्स गर्हित है, नरक है, पाप है, नरक का द्वार है, यह सिखा रहे हैं। छोटी बच्चियां, छोटे बच्चे यह सीख रहे हैं कि सेक्स पाप है, सेक्स नरक है, सेक्स से बुरा कुछ भी नहीं है। उसका विचार ही आना बुरा है, उसका खयाल ही आना बुरा है। इसको हम सिखा रहे हैं। बीस वर्ष की लड़की हो गई है इस भांति सीखी हुई। फिर उसका विवाह कर आए। उन्होंने शोर-गुल मचाया, बैंड-बाजे भी बजाए, उसका भी विवाह कर दिया, अब द्वंद्व शुरू होगा। जिसको आपने कहा पति है, इनको परमात्मा मानना है। इनको वह परमात्मा कैसे मानेगी? क्योंकि इनसे उनका संबंध जो होगा, वह सेक्स का होगा। और सेक्स से बड़ी पाप जैसी कोई चीज नहीं, तो ये परमात्मा कैसे हो सकते हैं, वह पति परमात्मा हो कैसे सकता है? इसका संबंध तो सेक्स का है। इसलिए पत्नी की बहुत गहरी दृष्टि मे पति से पतित और कोई व्यक्ति होता ही नहीं, हो भी नहीं सकता है। इसलिए वह एक ऐरे-गैरे साधु संन्यासी के पैर छू सकती है, पति के नहीं छूती है, तो परवश है, लेकिन जानती है भीतर से कि कैसा नीच आदमी है, कैसा निम्न आदमी है। वही पति भी जानता है कि पत्नी नरक का द्वार है। साधु-संन्यासी सिखा गए हैं कि नरक का द्वार है, यही तो तुमको लिए जा रही है नरक में।

एक स्त्री, एक महिला मुझसे रास्ते मे पूछती थी, ट्रेन में कि मुझे यह बताइए कि स्त्री पर्याय से मुक्ति कैसे मिले? यह बेवकूफों ने सिखाया हुआ है कि स्त्री पर्याय से मोक्ष नहीं हो सकता। जैसे मोक्ष भी यह देखता है देह, और नाप-जोख रखता है कि कौन पुरुष, कौन स्त्री! यह पुरुषों ने सिखाया है स्त्रियों को। और अगर स्त्रियां नरक के द्वार हैं, तो स्त्रियां तो अब तक नरक गई ही नहीं होंगी,

क्योंकि उनके लिए अगर पुरुष द्वार न हो तो वह नरक कैसे जाएंगी? अगर स्त्रियां किताबें लिखतीं कि पुरुष नरक के द्वार हैं। वे दोनों एक-दूसरे के नरक के द्वार हैं, क्योंकि सेक्स की मन में निंदा है।

सेक्स का मन में सम्मान होना चाहिए, निंदा नहीं। सेक्स के प्रति प्रकृतिस्थ स्वस्थ दृष्टिकोण होना चाहिए, जानना चाहिए कि वह जीतने की अत्यंत अनिवार्यता है। और जानना चाहिए कि सारी प्रकृति उस पर खड़ी है, सारा विराट सृजन उस पर खड़ा हुआ है। सेक्स से बड़ी शक्ति नहीं, सेक्स से बड़ी फोर्स नहीं। उसी पर तो सार खेल है। फूल इसलिए खिलते हैं, वृक्ष इसलिए खिलते हैं, पक्षी इसलिए गीत गाते हैं, बच्चे इसलिए पैदा होते हैं। सारी दुनिया में तो भी क्रिएटिवटी है, वह सब बुनियाद में सेक्स से संबंधित है। तो सेक्स को निंदित करके तो सब गड़बड़ हो जाएगा।

नहीं, उसकी निंदा की जरूरत नहीं है, उसे स्वीकार की जरूरत है। और स्वीकार के द्वारा उसको और कितना विकसित किया जा सकता है, इस दिशा में परिवर्तन, ऊर्ध्वगमन की जरूरत है। सेक्स जरूर एक दिन परिवर्तित हो कर ब्रह्मचर्य बन सकता है, लेकिन सेक्स के विरोध में लड़कर नहीं, वरन, सेक्स के प्रति अत्यंत सम्मान, अत्यंत सहृदयता, अत्यंत सहजता, अत्यंत मैत्रीपूर्वक उस शक्ति को पविर्तित किया जा सकता है। और मार्ग है कि प्रेम विकसित हो। मार्ग है कि प्रेम विकसित हो तो सेक्स भी अपने-आप गति में होता है। जैसे कि पानी को बहाव देना हो, हम एक नाली बना दें, तो पानी उससे बहने लगता है और नाली न हो तो फिर पानी कहीं भी बह जाता है। प्रेम की नाली अगर भीतर चित्त में निर्मित हो तो सेक्स की सारी इनर्जी प्रेम में परिवर्तित होती है और बहती है। लेकिन हमारी सारी शिक्षा भूल से भरी है, सारी संस्कृति भूल से भरी है; और इसलिए मनुष्य का चित्त रुग्ण से रुग्ण होता चला गया है। उस पर और ज्यादा तो फिलहाल मैं अभी नहीं कह सकूंगा। इधर कुछ मित्र सोचते हैं कि पूरा का पूरा कैम्प ब्रह्मचर्य पर हो। मैं भी सोचता हूं कि यह हो सकता है और होना चाहिए।

–ओशो

जीवन अमृत

OSHODHAM NEW DELHI

BORN Again Group

(अपना बचपन फिर से प्राप्त करो)

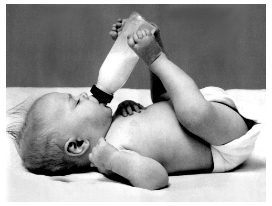

15 to 21 August

Inauguration: August 14, 6:30 p.m.

Conducted by: **Ma Dharm Jyoti**

इस ग्रुप के लिए ओशो का मार्ग दर्शन इस प्रकार है : बचपन को लौटा लाने की अभीप्सा सभी करते हैं, लेकिन उसे पाने के लिए करता कोई कुछ भी नहीं। बचपन को फिर से प्राप्त करने का यह अवसर मैं तुम्हें देता हूं।

- ओशो

Venue :
Osho Dhyan Mandir
44, Jhatikara Road, Pandwala Khurd
Near Najafgarh, New Delhi-110043

Advance Booking :
Osho Rajyoga Meditation Centre
C-5/44 Safdarjung Development Area
New Delhi-110016
Tel: 011-26862898, 26964533

For more information :
Osho World Galleria
BG-09 Ansal Plaza, Khelgaon Marg
New Delhi-110049• **Tel:.** 26261616/17
E-mail: contact@oshoworld.com

उल्लेखनीय : ध्यान शिविर में शामिल होने के लिए मैरून तथा सफेद रोब पहनना अनिवार्य है। इस ग्रुप में बीच में आना-जाना संभव नहीं है

ओशोधाम अगस्त 01 से 30 सितम्बर तक पूरे दो माह ध्यान-साधकों के लिए पूरा समय खुला रहेगा। घोषित ध्यान-शिविरों के अतिरिक्त अन्य दिनों में भी आप यहां आकर दैनिक ध्यान कार्यक्रमों में सम्मिलित हो सकते हैं।